संस्कृत साहित्य में मेरुदण्ड–पुराण

डॉ0 योगिता
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय,
कुरुक्षेत्र।

शोध–आलेख सार

पुराण हमारी संस्कृति के मूल स्रोत है, हमारी सभ्यता को उच्चकोटि तक पहुँचाने वाले ग्रन्थ–रत्न हैं, जिनकी विमल–प्रभा देश तथा काल के दुर्भेद्य आवरण को छिन्न–भिन्न कर आज भी विश्व के अध्यात्म–पारखी जौहरियों की आँखों को चकाचौंध बनाती है। विश्व के आद्य–ग्रन्थ भारतीय धर्म के कमनीय कल्पद्रुम तथा आर्य–संस्कृति के प्राणदाता पुराणों के रूप तथा रहस्य, स्वरूप तथा सिद्धान्त का ज्ञान भारतीय संस्कृति के उपासक के लिये नितान्त आवश्यक है। कर्म की दृढ़ उपासना ही आर्य संस्कृति का मेरुदण्ड है। वैदिक साहित्य के अनेक विषयों को कथानकीय आधार पर विस्तृत रूप देने का महत्वपूर्ण कार्य पुराणों ने किया। पुराणों में प्राचीन कथाओं को आधार बनाकर सनातन मूल्यों को ही स्पष्ट किया गया है।

मुख्य शब्द– त्रिविध ब्रह्म, संस्कृति, धर्मशास्त्र, राजधर्म, नीतिधर्म।

पुराण हमारी संस्कृति के मूल स्रोत है, हमारी सभ्यता को उच्चकोटि तक पहुँचाने वाले ग्रन्थ–रत्न है, जिनकी विमल–प्रभा देश तथा काल के दुर्भेद्य आवरण को छिन्न–भिन्न कर आज भी विश्व के आध्यात्म–पारख जौहरियों की आँखों को चकाचौंध बनाती है। विश्व के आद्य–ग्रन्थ भारतीय धर्म के कमनीय कल्पद्रुम तथा आर्य–संस्कृति के प्राणदाता पुराणों के रूप तथा रहस्य, स्वरूप तथा सिद्धान्त का ज्ञान भारतीय संस्कृति के उपासक के लिये नितान्त आवश्यक है। कर्म की दृढ़ उपासना ही आर्य संस्कृति का मेरूदण्ड है। वैदिक साहित्य के अनेक विषयों को कथानकीय आधार पर विस्तृत रूप देने का महत्वपूर्ण कार्य पुराणों ने किया। पुराणों में प्राचीन कथाओं को आधार बनाकर सनातन मूल्यों को ही स्पष्ट किया गया है।

'पुरा नवं भवति' (यास्क निरूक्त 3/17)

संस्कृत वाङ्मय में पुराण शब्द के अनेक पर्याय मिलते हैं– पुरातन, प्रतन, चिरन्तन आदि। अमरकोष में पुराण के सम्बन्ध में **'पुराणेप्रतन–प्रत्नपुरातन चिरंतनम्'** लिखा हुआ है। भारतीय वाङ्मय में 'इतिहास पुराण' के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध होने से प्राचीन संस्कृति साहित्य में भी दोनों का मिश्रित रूप प्रयुक्त हुआ है। **'छान्दोग्योपनिषद्'** में इतिहास पुराण को पंचमवेद माना गया है तथा यास्क के अनुसार ऋग्वेद में भी त्रिविध ब्रह्म के अंतर्गत इतिहास, पुराण मिश्रित मन्त्र आये है।

''ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि यजुर्वेदं सामवेदमाथर्वणं चतुर्थ मितिहासपुराणं पंचम वेदानां वेद् –7/2

पुराण भारतीय संस्कृति और साहित्य के महत्वपूर्ण अंग है। इनमें कवित्वपूर्ण रचनात्मक के साथ ही साथ भारतीय इतिहास का गौरवमय अंग उपन्यस्त है। पुराणों में लगभग 4 लाख श्लोक हैं, और

उनकी संख्या 18 मानी गयी है। इसमें महाकाव्ययी पुरा कथाओं का बहुत बड़ा भण्डार संचित है। धर्म, दर्शन, इतिहास, भूगोल, मानव सृष्टि और संहार के अतिरिक्त मनुष्यों के उत्तरदायित्व के सिद्धान्तों की शिक्षाऐं भरी पड़ी हैं। वायु पुराण में कहा गया है कि वह ब्राह्मण जो अगों सहित वेदों और उपनिषदों को जानता है, परन्तु पुराणों का ज्ञान नहीं है। **गिरधर शर्मा चतुर्वेदी** ने पुराणों की महत्ता प्रदर्शित करते हुए कहा है कि पुराण आर्य जाति के सर्वस्व है। इन्हें आर्य साहित्य के सुप्रसिद्ध प्रासाद के आधार स्तम्भ, प्राचीन इतिहास मन्दिर के स्वर्ण कलश, विविधज्ञा न समुद्र में तैरने वाले जहाज के प्रकाश स्तम्भ, सनानत धर्मरूप शामियाने की डोरियाँ, मानव समाज को संस्कृति का पथ प्रदर्शन करने वाले दिव्य प्रकाश तथा आर्य जाति की अनादिकाल से संचित विभागों की सुदृढ़ मंजूषाएं कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

'पुराण' शब्द का अर्थ है– प्राचीन कथाऐं इस शब्द की निरूक्ति अनेक स्थानों पर अनेक प्रकार से की गई है। 'वायुपुराण' में बतलाया गया है कि पूर्व परम्परा का वर्णन करने के कारण ही ये 'पुराण' है– 'पुरा परम्परां वक्ति पुराणं तेन वै स्पृतमं।' समीक्षा चक्रवर्ती पं0. मधुसूदन ओझा के अनुसार 'विश्वसृष्टेरितिहासः पुराणम्। अर्थात् विश्व सृष्टि का इतिहास ही पुराण है।

पुराणन्यायमीमांसा धर्मशास्त्राङ्गमिश्रिताः।
वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश।। (याज्ञवल्क्य स्मृति)

पुराण भारतीय संस्कृति का मेरूदण्ड कहा जा सकता है। पुराणों में भारतीय सृष्टिक्रम व्यवस्था, प्रलय, वंशानुचरित के अलावा प्राचीन भारतीय भूगोल, रीति–नीति, राजनीति, इतिहास, कैला एवं पुरातत्व का मंजूल सम्मिश्रण एवं उपवृंहण है। चन्द्रवंश के राजा पुरुरवा तथा उर्वशी के संवाद की एक झलग ऋग्वेद में मिलती है।

''पुरूरवासि राजवर्षावत्सरास्तूर्वशी पुरा।
न्यवसत्संविदं कृत्वा तस्मिन् धर्म चचार च।। (ऋग्वेद 10/95) 147

वैदिक देवताओं को ईश्वर के रूप में पूजने की स्वस्थ परम्परा पुराणों से विकसित हुई है। इन्द्र ऋग्वेदकाल के सर्वाधिक प्रिय देव तथा राष्ट्रीय देवता है–

योजात एव प्रथमो मनस्वान् देवो–देवान्क्रतुना पर्यभूषत्।
यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां, नृम्णस्य मह्वा स जनास इन्द्रः।। (इन्द्र सूक्त 1.14)

पौराणिक युग में राजवंशों का इतिहास लिखने की परम्परा रही है। गौतमबुद्ध से लेकर पाँचवी शताब्दी में होने वाले गुप्तवंशी स्कन्दगुप्त विक्रमादित्य तक की ऐतिहासिक जानकारी भागवत पुराण के आधार पर सम्भव है। पुराण स्वरूप प्रतिपादक सुप्रसिद्ध सर्गश्च पद्य इसी भाव का व्याख्यात्मक रूप है–

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशों मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चेति पुराणं पंचलक्ष्णम्।। (भागवत पुराण)

पुराणों का प्रभाव संस्कृत साहित्य पर ही नहीं अपितु हिन्दी साहित्य पर भी दिखाई देता है, भागवत पुराण के दशम स्कन्ध के आधार पर भक्तिकालीन कवि सूरदास ने श्रीकृष्ण की लीलाओं का चित्रण अद्भुत ढंग से किया है। गोस्वामी तुलसीदास की भूमिका में 'नाना पुराण निगमागम सम्मत'

कहकर काव्य में पुराणों का प्रभाव स्वीकारा, तुलसी ने पुराणों को वाक्य रूप में ग्रहण किया। 'कहहि वेद इतिहास पुराना' पुराणों में वर्णव्यवस्था तथा वर्णाश्रम धर्म का वैज्ञानिक विधान प्रतिपादित करे का एक सुन्दर प्रयास दिखलाई पड़ता है। राजाओं तथा ऋषियों के चरित्र को लेकर जो चारित्रिक धर्म प्रस्तुत किया है, वही सर्वजन के लिये अनुकरणीय है। भारतीय संस्कृत में अवतारवाद का श्रीगणेश पुराणों ने ही किया है–

यदा–यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजम्हयम्।। (श्रीमद्भगवतगीता)

पुराणों को भारतीय धर्म, साहित्य, इतिहास, कला, दर्शन आदि का विश्वकोष कहा जाता है, मानव मस्तिष्क ने जितने विषयों का आविष्कार किया सबका वर्णन पुराणों में है। पुराणों के महत्वपूर्ण विषयों में धर्मशास्त्र, दार्शनिक तत्वों का चिन्तन, राजधर्म, नीतिधर्म, तीर्थमहात्म्य एवं संस्कारों का समावेश है। इनकी विधाएँ आधुनिक समाज को अनेक चमत्कारों की ओर बढ़ने की प्रेरणाएँ देती है। आज के विज्ञान को आज की विविधमुखी सभ्यता का महक्त्व देने के लिए पुराणों का महनीय योगदान रहा है–

यो विद्याच्चतुरोवेदान् संगोपनिषदो द्विजाः।
न चेत् पुराणं संविधान्नैव स स्याद् विचक्षणः।। (1.200)
इतिहास पुराणाभ्यां वेदार्थमुपबृंहयेत्।
बिभेत्यल्पश्रुताद् वेदो मामंय प्रहरिष्यति।। (1/267)

संदर्भ

1. वैदिक साहित्य और संस्कृति (बलदेव उपाध्याय)
2. यास्क निरूक्त (3/17)
3. अमरकोष– 'पुराणेप्रतन– प्रत्नपुरातन चिरंतनम्'
4. भारतीय वाङ्मय– 'इतिहास–पुराण' 1.200
5. छान्दोग्योपनिषद्– 7/2
6. पुराण साहित्य का इतिहास।
7. याज्ञवल्क्य स्मृति– उपोद्धात प्रकरण– श्लोक 3
8. ऋग्वेद– 147
9. ऋग्वेद इन्द्रसूक्त–1.14
10. हमारी संस्कृति– डॉ. राधाकृष्णन्
11. गोस्वामी तुलसीदास– 'नाना पुराण निगमागम सम्मत'।
12. महाभारत (आदिपर्व)–1/267
13. श्रीमद्भगवतगीता– 'यदा–यदा हि धर्मस्यग्लानिर्भवति भारत।'
14. उपरिवत् पुरण साहित्य।